कथा सरिता

अमूल्य धरोहर

बहुत समय पहले विराट नगर के राजा नरेन्द्र सिंह थे। एक बार विराट नगर पर पड़ोसी राज्य श्याम नगर ने आक्रमण कर दिया। राजा अपनी प्रजा का बहुत ध्यान रखते थे इसलिए उन्होंने राज्य के सभी लोगों को परिवार सहित किसी सुरक्षित स्थान पर जाने को कह दिया। श्याम नगर की सेना विराट नगर की राजधानी में घुस गई। सेना ने नरेन्द्र सिंह और उनके साथ चल रहे कुछ लोगों को घेर लिया। नरेन्द्र सिंह ने सेनापति से कहा, `मेरे साथ चल रहे इन दस लोगों को छोड़ दो तो मैं आत्म समर्पण कर दूंगा।' सेनापति ने उन लोगों को छोड़ दिया और राजा नरेन्द्र सिंह को कैद कर लिया। सेनापति ने जब श्याम नगर के राजा के सामने राजा नरेन्द्र सिंह को प्रस्तुत किया तो उसने दस लोगों को राजा के कहने पर छोड़ने वाली बात भी बताई। श्याम नगर के राजा को यह सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ। उसने नरेन्द्र सिंह से उसका कारण पूछा तो वह बोला, `वे मेरे राज्य के संत और विद्वान थे। मेरे होने, न होने से राज्य में कोई अंतर नहीं पड़ेगा लेकिन किसी राज्य के हित के लिए वहां के संत और विद्वानों का बचे रहना ज़रूरी है। ये राज्य की अमूल्य धरोहर हैं। इन्हीं के दिए संस्कारों से राज्य में कर्त्तव्यनिष्ठ और योग्य नागरिकों का निर्माण होता है।' श्याम नगर के राजा ने प्रभावित होकर नरेन्द्र सिंह को छोड़ दिया और साथ ही उसका राज्य भी वापस कर दिया।

सपने का भ्रमजाल

विवेक नगर के राजा चंद्रसिंह थे। एक रात उन्होंने सपना देखा कि उनके राज्य में विद्रोह हो गया है। प्रजा ने उनका अपमान करके उन्हें निकाल दिया। वे भूख-प्यास से बेहाल घूम रहे हैं। तभी उन्हें एक सेठ की हवेली के आगे भूखे और गरीब लोग दिखाई दिए जिन्हें सेठ रोटी सब्जी बांट रहा था। उन्हीं में राजा भी जाकर खड़े हो गए और सेठ से रोटी-सब्जी खाने को ले ली। वे खाने ही लगे कि दो गायें लड़ती हुई वहां आई और लोगों की भगदड़ में उनके हाथ से रोटी-सब्जी गिरकर मिट्टी में मिल गई। राजा दुःखी और निराश होकर रोने लगे, तभी राजा की आँख खुल गई। सुबह हो चुकी थी। वे अपने महल में शैया पर लेटे हुए थे और महल के बाहर भाट उनकी जयकार कर रहे थे। राजा सोच में पड़ गए कि आखिर सच क्या है! उनका राजा होना या भूख से व्याकुल होकर रोटी के लिए रोना। उस दिन राजा दरबार में जल्दी पहुँच गए। उन्होंने जाते ही राज-ज्योतिषी और पंडितों से अपने सपने के बारे में पूछा तो कोई नहीं बता पाया। तभी संयोग से दरबार में उनके गुरू परमानंद वहां आ गए। उन्हें देख राजा आश्वस्त हुए। उन्होंने गुरू से पूछा तो वे बोले, `राजन, चिंतित न हों। न यह सपना सच्चा है और न आपका राजा होना। दोनों ही भ्रमजाल है। इस दुनिया में कुछ भी शाश्वत नहीं है।' गुरू की बात से राजा की बेचैनी दूर हो गई थी।

दयालु लकड़हारा

बहुत सामय पहले किशनपुर गांव में रामू नाम का एक गरीब लकड़हारा रहता था। वह दूसरों की मदद के लिए हमेशा तैयार रहता। जीवों के प्रति उसके मन में बहुत दया थी। एक दिन वह जंगल से लकड़ी इकट्ठी करने के बाद थक गया तो थोड़ी देर सुस्ताने के लिए एक पेड़ के नीचे बैठ गया। तभी उसे सामने के पेड़ से चिड़िया के बच्चों के ज़ोर-ज़ोर से चीं-चीं करने की आवाज़ सुनाई दी। उसने सामने देखा तो डर गया। एक सांप घोसले में बैठे चिड़िया के बच्चों की तरफ बढ़ रहा था। बच्चे उसी के डर से चिल्ला रहे थे। रामू उन्हें बचाने के लिए पेड़ पर चढ़ने लगा। सांप लकड़हारे के डर से नीचे उतरने लगा। उसी दौरान चिड़िया भी लौट आई। उसने जब रामू को पेड़ पर देखा तो समझा कि उसने बच्चों को मार दिया। वह रामू को चोंच मार-मारकर चिल्लाने लगी। उसकी आवाज़ से और चिड़िया भी आ गईं। सभी ने रामू पर हमला कर दिया। बेचारा रामू किसी तरह पेड़ से नीचे उतरा। चिड़िया जब घोसले में गई तो उसके बच्चे सुरक्षित बैठे थे। बच्चों ने चिड़िया को सारी बात बताई तो उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। वह रामू से माफी मांगना चाहती थी और उसका शुक्रिया अदा करना चाहती थी। उसे कुछ दिन पहले दाना ढूंढ़ते हुए एक कीमती हीरा मिला था। उसने हीरे को अपने घोसले में लाकर रख लिया था। चिड़िया ने वह हीरा रामू के आगे डाल दिया और एक डाली पर बैठकर अपनी भाषा में धन्यवाद करने लगी। रामू ने हीरा उठा लिया और चिड़िया की तरफ हाथ उठाकर उसका धन्यवाद किया और वहां से चल दिया। तभी कई चिड़िया आईं और उसके ऊपर उड़कर साथ चलने लगीं मानो वे उसका आभार करते हुए विदा करने आई हों।

जो बोओगे, वो काटोगे

रामपुर गांव में हरिचरण नाम का एक किसान रहता था। उसके दो बेटे थे शिवा और सुंदर। शिवा समझदार था और सुंदर बहुत ही भोला और कम समझ वाला था। हरिचरण बेटों को शुरू से ही एक सीख देता आ रहा था, `जो बोओगे, वो काटोगे।' हरिचरण अब बूढ़ा हो गया था और बीमार भी रहने लगा था। एक दिन उसने सारी ज़मीन और रुपए दोनों में बराबर-बराबर बांट दिए। इसके कुछ ही दिनों बाद हरिचरण का स्वर्गवास हो गया। शिवा ने पिता के पैसों से अच्छा बीज खरीदा और खेत में बो दिया। सुंदर को पिता की सीख याद थी `जो बोओगे, वो काटोगे' इसलिए उसने यह सोचकर कि रुपए बोऊंगा तो खेत में रुपयों की फसल होगी, मैं बहुत जल्दी धनवान हो जाऊंगा, उसने खेत जोतकर रुपए बो दिए। शिवा के खेत में फसल लहलहाने लगी लेकिन सुंदर का खेत ज्यों का त्यों पड़ा हुआ था। काफी दिन बीत गए, जब एक भी अंकुर नहीं फूटा तो वह चिंता में घुलने लगा और बीमार सा दिखने लगा। एक दिन शिवा ने कारण पूछा तो उसने बता दिया। सुनकर शिवा को सुंदर की नासमझी पर दया आई। उसने भाई को पिता की दी हुई सीख समझाई कि दूसरों के साथ जैसा व्यवहार करोगे तुम्हें बदले में वैसा ही मिलेगा। किसी के साथ भलाई करोगे तो भलाई मिलेगी और बुरा करोगे तो बुरा। वह फिर भाई के साथ खेत पर गया और सारे पैसे निकलवाए। उनसे बीज खरीदकर बुवाए। जब अच्छी फसल आई तो सुंदर की समझ में आया कि खेत में तो बीज ही बोए जाते हैं।

विलासपुर-छ.ग.। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री माननीय डॉ. रमन सिंह को ईश्वरीय संदेश देने के बाद सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रमा। साथ हैं अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

मोहाली फेज़ 7-पंजाब। विधायक बलबीर सिंह सिद्धू 'किसान सशक्तिकरण अभियान' यात्रियों का गुलदस्ता भेंट कर स्वागत करते हुए।

सासाराम-बिहार। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए डी.पी.एम. आचार्य मरमठ, भूमि संरक्षण अधिकारी जयनाथ सिंह, जिला परिषद अध्यक्ष प्रमिला सिंह, बहमन महासभा अध्यक्ष निर्मल दूबे, डॉ. कृति परासर, ब्र.कु. बबिता, ब्र.कु. सुनीता व अन्य।

सादड़ी-राज.। जैन समाज की ओर से ब्र.कु. शुचिता को समाज सेवा में उत्कृष्ट व अवर्णनीय कार्यों के लिए सम्मानित करते हुए जैन समाज के सदस्यगण। साथ हैं ब्र.कु. कविता।

इंदौर। सड़क दुर्घटना में पीड़ितों की याद में 'विश्व यादगार दिवस' पर ट्रान्सपोर्ट एवं ट्रैवल्स विंग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सुरक्षित यातायात के लिए नियमों का पालन करने की प्रतिज्ञा करते हुए बायें से पेट्रोल पंप संचालक शिवलाल पटेल, ट्रैफिक डी.एस.पी धरम लाल पटेल, ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. हेमलता, ऑटो मोबाइल एसोसिएशन के अध्यक्ष प्रवीण पटेल व ब्र.कु. सोनाली।

नौगाँव-म.प्र.। कृषि विज्ञान केन्द्र में ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में कृषि विज्ञान केन्द्र की वरिष्ठ अधिकारी वीणा पाणी, कृषि विकास अधिकारी बी.एन. राय, ब्र.कु. नन्दा तथा अन्य अधिकारीगण।